कुणाल-गीत

श्रीमैथिलीशरण गुप्त

Scanned with OKEN Scanner

२०११ वि०

मूल्य

१॥)

श्रीरामकिशोर गुप्त द्वारा
साहित्य प्रेस, चिरगाँव (झाँसी) में मुद्रित ।

७

मेरी आँखों के ज्योतिर्युग,
बता, कहाँ तू जायगा!
हिम किंवा खर-रश्मि-राशि में
किसमें आज समायगा!
दोनों में अपने को खोना,
और उन्हें कुछ लाभ न होना।
पर क्या अपने को देकर तू
उनको आप न पायगा!
मेरी आँखों के ज्योतिर्युग,
बता, कहाँ तू जायगा!
क्या होगा लेकर भी इतना!
हमें यथार्थ अपेक्षित कितना!
वह मरीचिका-जाल, न जानें,
कहाँ कहाँ भरमायगा!
मेरी आँखों के ज्योतिर्युग,
बता, कहाँ तू जायगा,

श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त लिखित काव्य—

साकेत	५)	गुरुकुल	३)
यशोधरा	१॥)	द्वापर	३)
सिद्धराज	१।)	हिन्दू	२)
भारत-भारती	२)	जयद्रथ-वध	।॥)
झंकार	१॥)	पत्रावली	।-)
वक-संहार	॥)	वन-वैभव	॥)
सैरन्ध्री	॥)	पञ्चवटी	।॥)
अजित	१॥)	हिडिम्बा	।॥)
तिलोत्तमा	१॥)	प्रदक्षिणा पाठ्य सं०	॥-)
चन्द्रहास	१॥)	अनघ	१।)
किसान	॥)	शकुन्तला	॥)
नहुष	॥=)	विश्व-वेदना	॥)
काबा और कर्बला	१।)	कुणाल-गीत	१॥)
अर्जन और विसर्जन	।=)	वैतालिक	।-)
गुरु तेगबहादुर	।=)	शक्ति	।-)
रङ्ग में भङ्ग	।=)	विकट-भट	।)
पृथिवीपुत्र	।॥)	अञ्जलि और अर्घ्य	।॥)
जय भारत	७)	युद्ध	।॥)

आपके अन्य ग्रन्थ और

श्रीसियारामशरणजी गुप्त के सारे ग्रन्थ भी हमसे मँगाइए।

प्रबन्धक—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)